देवबन्दियूँ की
रसूल **दुश्मनी** की ताज़ा मिसाल

लेखक: मुहम्मद शान रज़ा अल हनफ़ी
अनुवादक: आले रसूल अहमद कटिहारी

Published By: Jamia Ahsanul Banat Katihar

तु ज़िंदा है वल्लाह तु जिंदा है वल्लाह
मेरे चश्मे आलम से छुप जाने वाले

आँख वाले तेरी जोबन का तमाशा देखें
दीदाए कोर को क्या आए नज़र क्या देखे

यकीन वाले कहाँ से चले कहाँ पहुंचे
जो अहले शक हैं अगर में मगर में रहते हैं

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

अस्सलातु वास्सलामु अलै क या रसूलल्लाह

सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम

आवाज़ दो इन्साफ को इन्साफ किधर है ?

(देवबन्दियूँ की रसूल दुश्मनी की ताज़ा मिसाल)

आदरणीय पाठको ! जब बात आती है हबीबे किब्रिया सरवरे अंबिया हज़रत मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु अलैहि व आलिहि व सल्लम के गुणों एवं कमालातों की तो उस समय देवबंदी हज़रात बहुत संकीर्ण हो जाते हैं और उनकी कुफ्र व शिर्क की मशीन मुसलमानों की तरफ मुतवज्जाह हो जाती है और मुसलमानों को इन बेबाक मौल्वीयुं के कुफ्र शिर्क के फतवों का सामना करना पड़ता है. जैसा कि उनके इमाम इस्माइल देहलवी ने अपनी पुस्तक तकवीयतुल इमान लिख कर हमारे दावे को सच्चा साबित किया क्यूंकि मौलवी इस्माइल देहलवी हुजुर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की शान में अपमान करते हुवे यह लिखता है कि गोया कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया “मैं भी एक दिन मरकर मट्टी में मिलने वाला हूं” मुआज़ल्लाह (तकवीयतुल इमान पृष्ठ नंबर १३२)

आदरणीय पाठको ! अब इसी तकवीयतुल इमान पुस्तक का देवबंदी मज़हब में प्रामाणिक होना खुद देवबंदी मज़हब के उपनामी गौसे आज़म मौलवी रशीद अहमद गंगोही की ज़ुबानी सुनिए और इन देवबंदीयों की रसूल दुश्मनी मुलाहेज़ाह फरमायें |

मौलवी रशीद गंगोही से तकवीयतुल इमान के संबंध से प्रशन किया गया कि यह पुस्तक कैसी है तो इसके उत्तर में मौलबी रशीद गंगोही इस गुस्ताखियों से भरी पड़ी पुस्तक की प्रशंसा में यू चापलोस होते हैं कि " पुस्तक तकवीयतुल इमान बहुत अच्छी एवं सच्ची पुस्तक और अनुकूलन के शक्ति की सबब है ओर कुरान व हदीस का मतलब पूरा इसमें है इसका लेखक एक लोकप्रिय मनुष्य था | (फतवा रशीदिया भाग पर्थम पृष्ठ ११)
इसी तरह पृष्ठ २१ पर मौलवी रशीद गंगोही अपने गुरु इस्माइल देहलवी की इस पुस्तक की प्रशंसा में इस हद तक आगे निकल जाते हैं' और लिखते हैं कि "पुस्तक तकवीयतुल इमाननिहायत अच्छी पुस्तक है और शिर्क व बिद्दत में ला जवाब है | इस्तदलाल इसके बिलकुल किताबुल्लाह और अहादीस से हैं इसका रखना और पढ़ना और अमल करना ऐन इस्लाम है और मूजिबे अज़्र का है" अस्तग्फिरुल्लाह

आदरणीय पाठको ! इतने लेख से यह बात साफ़ तौर पर निखर कर सामने आ गयी कि हुजुर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मुआज़ल्लाह सुम म मुआज़ल्लाह मर कर मट्टी में मिल गये हैं और देव्बंदियु के इमाम इस्माइल ने इसको हुजुर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तरफ संबंधित किया और मौलबी रशीद गंगोही ने इसकी पुष्टि की और बक़ौल मौलवी रशीद गंगोही के कुरान व हदीस की पूरी पूरी व्याख्या इस पुस्तक ने की तो गोया देवबन्दियु के इमाम रशीद गंगोही के नज़दीक (मुआज़ल्लाह सुम म मुआज़ल्लाह) हुज़ूर का मरकर मट्टी में कुरान व हदीस से साबित है और यही नहीं बल्कि इसके रखने पढ़ने और अमल करने को ऐन

इस्लाम कह दिया यानी इस्लाम यही है और जो इस पुस्तक का इंकार करे और इसके विरोध बोले देवबन्दियूँ के नज़दीक वह शख्स इस्लाम के विरोध बोलता है इस्लाम का इनकार करता है अब नतीजा यह निकला कि अगर कोई शख्स इस्माइल देहलवी की इस पाठ पर विरोध करे तो गोया वोह इस्लाम पर विरोध कर रहा है | इस अपमानियता पाठ को न माने तो वोह गोया इस्लाम का विरोध कर रहा है (ला हौ ल वला कुव व त इल्ला बिलला)

आदरणीय पाठको ! यह था देवबन्दियु का अक़ीदा हुजुर सल्लल्लाहु अलैह व सल्लम के बारे में कि (मुआज़ल्लाह सुममा मुआज़ल्लाह) हुजुर सल्लल्लाहु अलैह व सल्लम मर कर मट्टी में मिल चुके हैं और जो इस चीज़ का इंकार करे वोह काफ़िर है क्यूंकि यह पुस्तक ऐन (विशेष रूप से) इस्लाम है और इस्लाम का इनकार करने वाला काफ़िर है जबकि हमारे नज़दीक यह अक़ीदा रखने वाला कि हुजुर सल्लल्लाहु अलैह व सल्लम मरकर मट्टी में मिल गये हैं काफ़िर है और इसमें हुजुर सल्लल्लाहु अलैह व सल्लम की अपमान की गयी है और हुजुर सल्लल्लाहु अलैह व सल्लम की अपमान सब की सहमति से कुफ्र है न कि विशेष रूप से इस्लाम जो इसको विशेष रूप से इस्लाम कहे वोह भी कायल (लेखक) की तरह काफ़िर व गुस्ताख है | यह तो था देवबन्दियूँ का आचरण हुजुर सल्लल्लाहु अलैह व सल्लम के संबंध से कि मुआज़ल्लाह सुम म मुआज़ल्लाह हुजुर सल्लल्लाहु अलैह व सल्लम .... मिल गये जबकि हुजुर सल्लल्लाहु अलैह व सल्लम ने समूह अम्बिया के संबंध में सराहतन हमारी रहनुमाई फरमाई कि.......

"ان اللہ تعالیٰ حرم علی الارض ان تاکل الاجساد الانبیاء"

(المستدرک علی الصحیحین کتاب الفتن والملاحم)

अनुवाद: कि बेशक अल्लाह त आ ला ने मट्टी पर हराम फरमा दिया है कि वह अंबिया के शरीरों को खायें |

अब तस्वीर का दूसरा मोड़ देखिये कि देवबंदी मौलवी हज़रात अपने गिरोह देवबंद से संबंधित लोगों के गुण के संबंध से क्या सिद्धांत है तो आदरणीय पाठको आज मैं ने देवबंदियुं की वेब साईट खोल कर देखी कि देवबंदियों ने हम अहले सुन्नत वल जमाअत के विरोध कोई नया ज़हर उगला हो तो देखा जाये ताकि इसका जवाब भी www.deobandimazhab.com पर दिया जा सके लेकिन जब वेब साईट देखी तो इस के मैन पेज पर एक समाचार पत्र का टुकड़ा देखा आप भी मुलाहेजा फरमायें......................................

www.express.com.pk

DAILY EXPRESS

روزنامہ ایکسپریس اسلام آباد

FRIDAY, NOVEMBER 23, 2012

رائیونڈ: 40 سال پرانی قبر میں مدفون مردے کا چہرہ تروتازہ، لوگ دیکھنے قبرستان پہنچ گئے

رائیونڈ (این این آئی) تبلیغی مرکز سے ملحقہ قبرستان میں قبر کھودنے کے دوران 40 سال پرانی گڑھوں والی قبر دریافت ہوئی جس میں مدفون مردے کا چہرہ زندہ شخص کی طرح بالکل تروتازہ پایا گیا۔ اردگرد کی آبادیوں سے سینکڑوں افراد دیکھنے کیلئے قبرستان پہنچ گئے۔ تبلیغی مرکز کے علمائے کرام سے رابطہ کیا گیا تو انہوں نے اس شخص کی شناخت کو مخفی رکھا اور بتایا کہ تبلیغی اجتماع کے دوران انتقال ہوا تھا۔

आदरणीय पाठको ! आप ने मुलाहेजा फ़रमाया कि देवबंदी इस सूचना पर बहुत ख़ुशी मना रहे हैं कि एक देवबंदी की क़ब्र खुली तो ४० साल के बाद भी उसका चेहरा तरो ताज़ा निकला |
आदरणीय पाठको इस सूचना पर मेरे कुछ प्रशन हैं वोह यह कि.....

१. इस मदफ़ून (दफनाया गया मनुष्य) के देवबंदी होने पर देवबन्दियूँ के पास क्या दलील है ?
२. और इसकी क्या दलील है कि यह क़ब्र ४० साल बाद खुली ?
३. देवबंदी मौल्वीयूँ को यह इल्मे गैब (अनदेखी ज्ञान) कैसे हासिल हो गया की यह शख्स तब्लीगी इज्तमा मैं निधन कर गया था ?
४. और क्या वजह है कि हुजुर सल्लाल्ल्हू अलैहि व सल्लम मुआज़ल्ला सुम्म मुआज़ल्ला देवबंदी अक़ीदा के मुताबिक़ मर कर मट्टी मैं मिल चुके हैं मगर बकौले देवबन्दियूँ के एक ऐसा मनुष्य जो यह अक़ीदा रखता हो कि हुजुर सल्लाल्ल्हू अलैहि व सल्लम मर कर मट्टी मैं मिल गये वोह खुद मट्टी में ना मिला बल्कि सही सलामत तरो ताज़ा चहरे के साथ निर्यात हुवा |

आदरणीय पाठको ! अब यह साबित हुवा या ना हुवा कि यह मनुष्य देवबंदी था या नहीं यह बिलकुल साबित हो गया कि देवबंदी हुजुर सल्लाल्ल्हू अलैहि व सल्लम के दुश्मन हैं कि हुजुर

सल्लाल्लहू अलैहि व सल्लम तो अपने क़ब्र में सही व सलामत मौजूद नहीं मगर देवबंदी मौलवी ४० साल के बाद भी सही सलामत है | लानत है इन बे बाक गुस्ताख मौलवियों पर कि जो हुजुर सल्लाल्लहू अलैहि व सल्लम के बारे में तो यह अक़ीदा कि मुआज़ल्ला वह अपने कब्र में सही सलामत नहीं बल्कि मिट्टी में मिल गये हैं और अपने (बक़ौल देव्बन्दियुं) मौलवी के बारे में सिद्धांत रखें कि वह चालीस साल बाद भी तरो ताज़ा रहा ? क्या यह रसूल दुश्मनी नहीं ?

अल्लाह से दुआ है कि अगर लिखने में कोई गलती हो गयी हो तो माफ़ फरमाए और सुन्नी विद्वान अगर कोई शरई गलती पायें तो सूचना फरमा कर शुक्रिया का मौका प्रदान करें |

तालिबे दुआ..................

लेखक : मुहम्मद शान रज़ा क़ादरी अल-हनफ़ी

अनुवादक: आले रसूल अहमद अल-अशरफी अल-क़ादरी

(रियाद सऊदी अरब)

Email: aalerasoolahmad@gmail.com

Blogger: http://aalerasoolahmad.blogspot.com

Website: www.deobandimazhab.com

आला हज़रत की आखरी वसीयत

जिस से अल्लाह व रसूल की शान में अदना तौहीन पाओ फिर वह तुम्हारा कैसा ही प्यारा हो फ़ौरन उससे जुदा हो जाओ जिसको बारगाहे रिसालत में जरा भी गुस्ताखी देखो फिर वोह तुम्हारा कैसा ही मुअज्जम क्यूँ न हो अपने अन्दर से उसे दूध से मक्खी की तरह निकाल कर फेंक दो | मैं ने पौने चोदह साल की उम्र से यही बताता रहा और इस वक़्त फिर यही अर्ज़ करता हूँ अल्लाह जरूर अपने दीन की हिमायत के लिए किसी बन्दे को खड़ा कर देगा मगर नहीं मालूम मेरे बाद जो आए कैसा हो और तुम्हें क्या बताये | इसलिए इन बातों को खूब सुन लो हुज्जतुल्लाह क़ाएम हो चुकी अब में कब्र से उठ कर तुम्हारे पास बताने न आउंगा जिसने इसे सुना और माना क़ियामत के दिन उस के लिए नूर व निज़ात है और जिस ने ना माना उस के लिए ज़ुल्मत व हलाकत |

Introduction to AIUMB

All India Ulama & Mashaikh Board (AIUMB) has been established with the basic purpose of popularizing the message of peace of Islam and ensuring peace for the country and community and the humanity. AIUMB is striving to propagate Sunni Sufi culture globally .Mosques, Dargahs, Aastanas, and Khanqwahs are such fountain heads of spirituality where worship of God is supplemented with worldly duties of propagating peace, amity, brotherhood and tolerance.

AIUMB is a product of a necessity felt in the spiritual, ethical and social thought process of Khaqwahs.Khanqwahs also have made up their mind to update the process and change with the changing times. As it is a fact that Khanqwahs cannot ignore some of the pressing problems of the community so the necessity to change the work culture of these centers of preaching and learning and healing was felt strongly. AIUMB condemns all those deeds and words that destabilize the country as it is well known that this religion of peace never preaches hatred .Islam is for peace. Security for all is the real call. AIUMB condemns violence in all its form and manifestation and always ready to heal the wounds of all the mauled and oppressed human beings. The integral part of the manifesto of AIUMB is peace and development. And that is why Board gives first priority to establish centers of quality modern education in Sunni Sufi dominated ares of the country. The other significant objectives of the Board are protection of waqf properties, development of Mosques, Aastanas, Dargahs and Khanqwahs.

This Board is also active in securing workable reservation for Muslims in education and employment in proportion to their population. For this we have been organizing meetings in U.P, Rajasthan, Gujrat, Delhi, Bihar, West Bengal, Jharkhand, Chattisgadh, Jammu& Kashmir, and other states besides huge Sunni Sufi conferences and Muslim Maha Panchayets . Sunni conference (Muradabad 3rd Jan 2011)Bhagalpur(10th May 2010) and Muslim Maha Panchayet at Pakbara Muradabad (16th October 2011) and also Mashaikh e tareeqat conference of Bareilly (26th November 2011) are some of the examples.

HISTORICAL FACT AND THE NEED OF THE HOUR

The history of India bears witness to that fact that when Alama Fazle Haq Khairabadi gave the clarion call to fight for the freedom of our country all the Khanqahs and almost all the Ulama and Mashaikh of Ahl-E-Sunnah Wal-Jamaat rose in unison and gave proof of their national unity and fought for Independence which resulted in liberation of our country from British rule.

But after gaining freedom, our Khanqahs and The Ulama of Ahl-E-Sunnah Wal-Jamaat went back to the work of dawa and spreading Islam, thinking that the efforts that were undertaken to gain freedom are distant from religion and leaving it to others to do the job. Thus the Independence for which our Ulama and Mashaikh paid supreme sacrifice and laid down their lives resulted in us being enslaved and thereby depriving us legimative right to participate in the governance of our country.

After the Independence hundreds of issues were faced by the Umma, whether religious or economic were not dealt with in a proper way and we kept lagging behind. During the lat 50 years or so a handful of people of Ahl-E-Sunnah Wal-Jamaat could become MLA’s, MP’s and

minister due to their individual efforts lacking all along solid organized community backing as a result of which Ahl-E-Sunnah Wal-Jamaat remained disassociated with the Government machinery and we find that we have not been able to found foothold in the Waqf Board, Central Waqf Board, Hajj Committee, Board for Development of Arbi, Persian & Urdu or Minorities Commission. Similarly when we look towards political parties big or small we see a specific non-Sunni lobby having strong presence. In all the Institution mentioned above and in all political parties Sunni presence is conspicuous by its absence.

Time and again Ulama and Mashaikh have declared that the Sunni's constitutes a total of approximately 75% of all Muslim population. This assertion have lived with us as a mere slogan and we have not been able to assert ourselves nor have we made any concerted efforts to do so. It is the need of the hour that The Ulama and Mashaikh should unite and come on single platform under the banner of Ahl-E- Sunnah Wal-Jamaat to put forward their message to the Sunni Qaum. To propagate our message Sunni conferences should be held in the District Head Quarters and State Capitals at least once a year to show our strength and numbers this is an uphill task and would require huge efforts but rest assured that once we do that we shall be able to demonstrate our number leaving the non-Sunni way behind thereby changing the perception of political parties towards us and ensuring proper representation in every field.

AIMS AND OBJECTIVES OF AIUMB

To safeguard the right of Muslim in general and Ahl-E-Sunnah Wal-Jamaat in particular.

To fight for proper representation of responsible person of Ahl-E-Sunnah Wal-Jamaat in national and regional politics by creating a peaceful mass movement.

To ensure representation of Sunni Muslim in Government Organization specially in Central Sunni Waqf Boards and Minorities Commission.

To fight against the stranglehold and authoritarianism of non-Sunni's in State Waqf Board.
To ensure representation of Ahl-E-Sunnah Wal-Jamaat in the running of the state waqf board.

To end the unauthorized occupation of the Waqf properties belonging to Dargahs, Masajids, Khanqahs and Madarasas, by ending the hold of non-Sunni's and to safeguard Waqf properties and to manage them according to the spirit of Waqf.

To create an envoirment of trust and understanding among Sunni Mashaikh, Khanqahs and Sunni Educational institution by realizing the grave danger being paced by Ahl-E-Sunnah Wal-Jamaat. To rise above pettiness, narrow mindedness and short sightedness to support common Sunni mission.

To work towards helping financially weak educational institutions.

To provide help to people suffering from natural calamities and to work for providing help from Government and other welfare institutions.

To help orphans, widows, disabled and uncared patients.

To help victims of communalism and violence by providing them medical, financial and judicial help.

To organize processions on the occasion of Eid-Miladun-Nabi (SAW) in every city under the leadership of Sunni Mashaikh. To restore the leadership of Sunni Mashaikh in Juloos-E-Mohammadi (SAW) wherever they were organized by Wahabi and Deobandis.

To serve Ilm-O-Fiqah and to solve the problem in matters relating to Shariah by forming Mufti Board to create awareness among the Muslims to understand Shariah

To establish Interaction with electronic and print media at district and state level to express our viewpoint on sensitive issues.

Ashrafe–Millat Hazrat Allama Maulana Syed Mohammad Ashraf Kichhowchhwi

President & Founder All India Ulama & Mashaikh Board

Email : ashrafemillat@yahoo.com

Twitter : www.twitter.com/ashrafemillat

Facebook : www.facebook.com/AIUMBofficialpage

Website: www.aiumb.com

Head Office :

20, Johri Farm,
2nd Floor, Lane No. 1
Jamia Nagar, Okhla
New Delhi -25
Cell : 092123-57769
Fax : 011-26928700

Zonal Office
106/73-C,
Nazar Bagh, Cantt. Road,
Lucknow.
Email : aiumbdel@gmail.com

ان شاء اللہ عزوجل
ھندی زبان میں بہت جلد آپ لوگوں کی خدمت میں پیش کیا جائیگا۔
علم غیب اور علمائے دیوبند کی قلابازیاں